अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 25 मई 2019

सोचने, काम करने और अपनी बात लोगों तक पहुंचाने की कला ही सफल नेतृत्व के गुण हैं...
...सिमोन सिनेक, *अमेरिकी लेखक*

भाजपा की मजबूती के दौर में चार राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे क्षेत्रीय दलों की ताकत के बारे में बताते हैं, हालांकि अरुणाचल में भाजपा अपने दम पर सरकार बनाने जा रही है।

क्षत्रपों की ताकत

लोकसभा चुनाव में भाजपा की भारी जीत के समानांतर आंध्र प्रदेश, ओडिशा, अरुणाचल और सिक्किम में हुए विधानसभा चुनावों में कुछ नए सितारे चमके हैं, कुछ ने अपना करिश्मा बरकरार रखा है, तो कुछ पुराने सितारे अस्त भी हो गए हैं। उदाहरण के लिए, आंध्र में जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व में वाईएसआर कांग्रेस ने लोकसभा की 22 सीटों पर कब्जा जमाने के अलावा विधानसभा चुनाव में सत्तारूढ़ टीडीपी को परास्त कर भारी बहुमत हासिल किया है, जो विभाजित आंध्र में सबसे बड़ी जीत है। चुनाव की योजनाबद्ध तैयारी तथा महिलाओं, कामगारों और मुस्लिमों के समर्थन का जगन को लाभ मिला है। चौदह महीने तक चली जगन की 3,640 किलोमीटर लंबी पदयात्रा का भी असर हुआ है, आंध्र में पदयात्रा करने वालों को सत्ता मिलती रही है। हालांकि शपथ लेने के बाद जगन की चुनौतियां शुरू होंगी, क्योंकि उन्होंने वायदों की झड़ी लगा दी थी, जबकि खजाना खाली है। ओडिशा में नवीन पटनायक की दो तिहाई बहुमत के साथ सत्ता में लगातार पांचवीं बार वापसी भी शानदार उपलब्धि है। राज्य के पचास लाख छोटे व सीमांत किसानों को सालाना दस हजार रुपये की आर्थिक मदद वाली कालिया योजना, आयुष्मान भारत की जगह बीजू स्वास्थ्य कल्याण योजना समेत कई कल्याणकारी योजनाओं के अलावा लोकसभा में महिलाओं को तैंतीस फीसदी टिकट देने का लाभ भी उन्हें विधानसभा चुनाव में महिलाओं के एकजुट समर्थन से मिला। फैनी तूफान से जूझने की तैयारी ने नवीन बाबू को अपनी जनता में लोकप्रिय बनाया है। हालांकि भाजपा वहां बड़ी चुनौती बन रही है, जिसने लोकसभा चुनाव में बड़ी सफलता पाई, तो विधानसभा में भी पहली बार मुख्य विपक्षी दल बन गई है। इसी तरह अरुणाचल प्रदेश में भाजपा पेमा खांडू के नेतृत्व में पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने जा रही है, जो पूर्वोत्तर में उसकी

उपलब्धि का एक और पड़ाव है, तो सिक्किम में चौबीस साल से मुख्यमंत्री रहे पवन चामलिंग का सितारा अस्त हो गया है, जिनकी पार्टी एसडीएफ को सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा से शिकस्त मिली है। हैरानी की बात यह है कि बाइचुंग भूटिया की पार्टी भी सभी सीटों पर हार गई। भाजपा के उभार के इस दौर में इन विधानसभा चुनावों के नतीजे अब भी राज्यों में क्षेत्रीय दलों की मजबूती के बारे में ही बताते हैं।

मोदी पर रायशुमारी

अब जनता ने मोदी को दोबारा मौका दिया है, उन्हें राष्ट्र निर्माण के अधूरे काम को पूरा करना चाहिए। अपनी ऐतिहासिक जीत के बाद उन्हें विपक्षी पार्टियों के विरोधी विचारों पर भी ध्यान देना चाहिए। भारत में वसुधैव कुटुम्बकम किसी भी शासक के लिए राजधर्म होना चाहिए।

सुरेंद्र कुमार
पूर्व राजदूत

वर्ष 1952 के बाद सबसे उग्रता के साथ लड़े गए 2019 के संसदीय चुनाव के नतीजे से बहुत पहले से ही कई दिग्गज और दूसरी पीढ़ी के नेता, लेखक, शिक्षाविद, पत्रकार आदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदाई का गीत गा रहे थे। अब जबकि वास्तव में मोदी के नाम परोक्ष रूप से हुए 'नेशनल रेफरेंडम' का फैसला आ गया है, कयामत के दिन की भविष्यवाणी करने वाले लोगों को लग रहा होगा कि उन्होंने मोदी की हार का आकलन करने में जल्दबाजी की। जाहिर है, वे जमीनी हकीकत की वास्तविकता को समझने के बजाय अपनी काल्पनिक दुनिया में बह गए। राजनीतिक नेताओं का सच्चे तथ्यों के बजाय अपने चाटुकारों और समर्थकों की तरफ झुकाव ऐसे चौंकाने वाले नतीजे की ओर ले जाता है।

अखिलेश यादव, ममता बनर्जी, चंद्रबाबू नायडू, मायावती, राहुल व प्रियंका गांधी और शरद पवार जैसे नेताओं के अलावा एन राम जैसे पत्रकारों ने मोदी की हार के बारे में भविष्यवाणी की। लेकिन अब देखिए कि कैसे ये सब दिग्गज गलत साबित हुए! यह नतीजा उनके बारे में क्या कहता है और नरेंद्र मोदी व मतदाताओं के बारे में क्या कहता है? क्या ये नेता मतदाताओं के मानस का मूल्यांकन, विश्लेषण करने में विफल रहे और मतदाताओं की प्राथमिकता को नहीं समझ सके? लगता है, उन्होंने अपने निष्कर्षों को जनता के ऊपर थोप दिया और अपनी ही धारणाओं को जनता की धारणा मान ली। तो क्या रोजगार सृजन का संकट, कृषि संकट, बड़े-बड़े वादों का पूरा न होना, नोटबंदी का प्रतिकूल असर और जीएसटी के कार्यान्वयन की गड़बड़ियां विपक्षी नेताओं की महज कल्पना थीं? क्या इन मुद्दों ने ज्यादातर मतदाताओं के मन को उद्वेलित नहीं किया? अब यह स्पष्ट है कि इन मुद्दों पर मोदी सरकार की आलोचना पूरी तरह से अतिरंजित थी। निश्चित रूप से इन सब चीजों से लाखों लोगों को असुविधा हुई और वे बुरी तरह से प्रभावित हुए, लेकिन उनके असंतोष ने तीखी कड़वाहट की

सीमा को पार नहीं की, जैसा कि 1977 में हुआ था, जब असंतुष्ट विपक्षी दलों ने 'इंदिरा हटाओ' के एकमात्र उद्देश्य के लिए हाथ मिलाया था। ऐसा आपातकाल के दौरान बड़े पैमाने पर हुई ज्यादातियों के कारण हुआ था, जिसके लिए जनता इंदिरा गांधी और संजय गांधी को जिम्मेदार मान रही थी। बेशक इस बार भी कई नेताओं ने 'मोदी हटाओ' का नारा लगाया, पर उसे ज्यादातर मतदाताओं ने नकार दिया, अन्यथा वे मोदी को वोट नहीं देते। मोदी ने सरल शब्दों से इसे खारिज कर दिया-वे कहते हैं, मोदी हटाओ, मैं कहता हूं, देश बचाओ।

असली बात है-भरोसा। मोदी के बड़े-बड़े वादों के पूरा न होने के बावजूद मतदाताओं ने अवसरवादी विपक्ष के गठजोड़ पर भरोसा करने के बजाय मोदी पर भरोसा किया और उन्हें एक और मौका दिया। कई मोर्चों पर विफलता के बावजूद उन्होंने मोदी सरकार के पांच साल के कार्यकाल को उदार ढंग से देखा, जो बताता है कि आजमाने और विफल होने की तुलना में बेहतर है कि किसी और को न आजमाया जाए। आत्मविश्वास एक संपत्ति है और यह आपको अपने विरोधी से बेहतर बनने में मदद करता है, लेकिन अपने विरोधी को कमतर और खुद को बढ़ा-चढ़ाकर आंकना खुद को धोखे में रखना है, जो हार का कारण बनता है। राहुल गांधी और मोदी के सभी विरोधियों ने मोदी की वक्तृत्व कला, सांगठनिक, प्रशासनिक, संप्रेषण कौशल और आकांक्षाओं को पूरा करने की क्षमता को कमतर करके आंका, जो भारतीय लोगों के मानस पर एक गहरी पकड़ बनाते हैं। अपने अंतर्निहित अंतर्विरोधों को खारिज करते हुए उन्होंने केवल मोदी को हटाने के लिए मतदाताओं को प्रेरित किया। जाहिर है, अधिकांश मतदाताओं ने उनके तर्क को नहीं माना।

राहुल गांधी ने राफेल सौदे की बहुत चर्चा की, बेशक कुछ लोगों को संदेह होगा कि इसमें कुछ पैसे किसी को मिले होंगे, लेकिन कोई भी यह नहीं मानता कि इसमें से कुछ पैसे मोदी की जेब में गए होंगे। लाखों ग्रामीण मतदाता राफेल के बारे में जानते तक नहीं। रोजमर्रा के जीवन में सरकारी एजेंसियों द्वारा जमीनी स्तर पर भ्रष्टाचार उन्हें ज्यादा प्रभावित करता है। 'चौकीदार चोर है' का नारा लोगों को अच्छा नहीं लगा। बेशक कांग्रेस की रैली में राहुल के समर्थकों ने इस पर अनुकूल प्रतिक्रिया दी हो, लेकिन शेष लोगों ने इसका प्रतिकार किया होगा। क्या मोदी की जीत यह बताती है कि समाज में बढ़ता विभाजन, विरोधी विचारों के प्रति असहिष्णुता, कट्टर बहुसंख्यकवाद, कानून हाथ में लेना, राष्ट्रीय संस्थानों पर नियंत्रण, हिंदुत्व का प्रचार, राष्ट्रवाद का आह्वान सभी झूठी खबरें हैं? क्या यह आज के भारत की मनोदशा को दर्शाता है?

खैर, इस बीच राहुल एक ऊर्जावान, मुखर और साहसी नेता के रूप में उभरे हैं, जो अपने कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर सकते हैं। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और बिहार में हार उन्हें ईमानदार आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करेगी। वह भविष्य में अपनी पार्टी को एक मजबूत विपक्ष बना सकते हैं। उन्हें चाटुकारों से छुटकारा पाना चाहिए और जमीन पर लोगों से जुड़ना चाहिए। प्रियंका एक प्रतिष्ठित और विनम्र प्रचारक हैं, जो कांग्रेस को पुनर्जीवित करने में मदद कर सकती हैं। मायावती और अखिलेश ने गठजोड़ करके राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया, दुर्भाग्य से शीर्ष नेताओं की इस खुशमिजाजी को जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं ने नहीं स्वीकारा। इन दोनों को गठबंधन को जारी रखना चाहिए और विधानसभा चुनाव की तैयारी करनी चाहिए। ममता को यह झटका तो लगना ही था, वह एक जननेत्री हैं, वह खुद कानून नहीं हो सकतीं। भ्रष्टाचार के आरोप एवं गुंडों के इस्तेमाल ने उनकी छवि धूमिल कर दी। मोदी एक अनूठे राजनेता हैं, 2014 में वह लाखों लोगों की उम्मीदों पर सवार होकर सत्ता में आए थे। पिछले वर्ष मैंने अपने लेख में लिखा था कि उन्होंने आजादी के बाद के सभी प्रधानमंत्रियों से ज्यादा जनहितैषी योजनाएं शुरू की हैं। अगर उनमें से 60 फीसदी भी पूरी तरह से लागू हो गईं, तो भारत बदल जाएगा। अब जनता ने दोबारा मौका दिया है, उन्हें राष्ट्र निर्माण के अधूरे काम को पूरा करना चाहिए। अपनी ऐतिहासिक जीत के बाद मोदी को विपक्षी पार्टियों के विरोधी विचारों पर भी ध्यान देना चाहिए। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में वसुधैव कुटुम्बकम, सर्व धर्म समभाव और सबका साथ सबका विकास किसी भी शासक के लिए राजधर्म होना चाहिए।

साहित्य अनुभव की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति है

अपनी कहानी

>> जोखा अल्हार्थी

इस उपन्यास के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय पाठकों को पता चल सकेगा कि, ओमान में सक्रिय और प्रतिभाशाली लेखन समुदाय मौजूद है, जो अपनी कला के लिए जीते हैं, और काम करते हैं।

***मैं** बहुत खुश हूं कि, जो सम्मान मुझे मिला है, उससे अरब की सभ्यता और संस्कृति के लिए भी साहित्य जगत के दरवाजे खुल गए हैं। यह पुरस्कार पाने वाली मैं पहली अरबी लेखिका हूं। मैं ओमान की रहने वाली हूं और अभी मस्कट के सुल्तान काबुस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हूं। मैंने एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से अरबी काव्य पर पीएचडी की है। मुझे उम्मीद है कि, पाठक इस उपन्यास से खुद को जोड़ पाएंगे। ओमान ने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया है। मुझे लगता है कि अंतरराष्ट्रीय पाठकों का जुड़ाव पुस्तक के मानवीय मूल्यों- स्वतंत्रता और प्रेम से होगा।*

साहित्य के साथ बीता बचपन

मेरा बचपन साहित्यिक माहौल में बीता। मेरे परिवार के कई सदस्य कवि थे। उनसे प्रेरित होकर मैंने बहुत छोटी उम्र से लिखना शुरू कर दिया। 19 साल की उम्र में मेरी पहली किताब आई। मैंने अरबी भाषा में तीन उपन्यास, बच्चों की एक किताब और दो लघु कहानी संग्रह लिखे हैं। 2001 में पहली बार लघु कथाओं के लिए मुझे अल-शरीका अवॉर्ड मिला। उसके बाद यह सिलसिला रुका नहीं। 2010 में मुझे बेस्ट ओमानी चिल्ड्रेन बुक उस-अल-असाफिर व बेस्ट ओमानी नॉवेल सैय्यदत-अल-कमर के लिए पुरस्कृत किया गया। 2011 में लेखन के लिए मुझे युवा लेखकों की श्रेणी में शेख जायेद पुरस्कार के लिए चुना गया। वहीं 2016 में संस्कृति, कला और साहित्य से परिपूर्ण मेरे उपन्यास नरिंजाह के लिए सुल्तान कुबूस अवॉर्ड मिला। मेरी लघु कथाएं अंग्रेजी, जर्मन, इतालवी, कोरियाई और सर्बियाई भाषा में भी प्रकाशित हुई हैं। अब मुझे सेलेस्टियल बॉडीज के लिए प्रतिष्ठित मैन बुकर अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

ओमान का सच है उपन्यास

ओमान के बारे में एक किताब लिखने की लंबे समय से मेरी योजना थी। लेकिन जब मैं ओमान में थी, तब नहीं लिख पाई। एडिनबर्ग में मेरा पहला वर्ष बहुत मुश्किल भरा रहा। लेकिन वास्तव में लेखन ने मुझे बचा लिया। सेलेस्टियल बॉडीज ओमान के अल-अवाफी गांव में रहने वाली मध्यमवर्ग की तीन बहनों के जरिये वहां उपनिवेशवाद खत्म होने के बाद हो रहे बदलाव की कहानी है। यह ऐसे परिवार का चित्रण है, जिसमें प्रेम, हानि, दोस्ती, दर्द और आशा की सार्वभौमिक भावनाएं मौजूद हैं। वे आत्मा की जटिलता और ताकत की स्वतंत्रता का प्रदर्शन करती हैं, जो कि ओमान की महिलाओं का सच है। वे गवाह हैं, उस ओमान का जो एक पारंपरिक, गुलाम-मालिक समाज से विकसित होता है, और धीरे-धीरे अपने को जटिल वर्तमान के चौराहे पर फिर से परिभाषित कर रहा है।

संवाद के लिए साहित्य अच्छा मंच

इस उपन्यास के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय पाठकों को पता चल सकेगा कि ओमान में सक्रिय और प्रतिभाशाली लेखन समुदाय मौजूद है, जो अपनी कला के लिए जीते हैं, और काम करते हैं। वे लेखन के लिए त्याग और संघर्ष करते हैं, उसमें आनंद ढूंढते हैं। यहां की कला में बहुत समानता है। यह गुलामी के विषय को छूता है। मुझे लगता है कि इस संवाद के लिए साहित्य सबसे अच्छा मंच है। मैं ऐसे जीवन के चित्रण का लक्ष्य रखती हूं जो 21 वीं सदी के ओमान की एक भरोसेमंद सामाजिक छवि पेश करते हुए, विशेष रूप से दुनिया के इस हिस्से से कम परिचित लोगों के जेहन में गूंजती रहेगी।

-2019 के मैन बुकर पुरस्कार प्राप्त लेखिका के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

पुलित्जर पुरस्कार

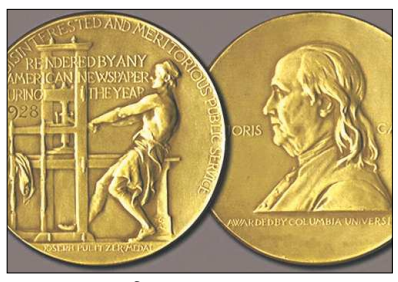

>> पुलित्जर पुरस्कार पदक

पहला पुलित्जर पुरस्कार 4 जून 1917 को प्रदान किया गया था।

अमेरिकी अखबार 'न्यूयॉर्क टाइम्स' और 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके परिवार से संबंधित जानकारियां व वित्तीय अनियमितताओं की खबरें सामने लाने के लिए 'पुलित्जर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। अमेरिकी जोसेफ पुलित्जर ने अपनी वसीयत में न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय को पत्रकारिता स्कूल शुरू करने और पुरस्कार स्थापित करने के लिए पैसे दिए, जिन्होंने अखबार प्रकाशक के रूप में अपनी पहचान बनाई थी। इसमें पुरस्कार व छात्रवृत्ति के लिए 2,50,000 डॉलर आवंटित किए। पहला पुलित्जर पुरस्कार 4 जून, 1917 को प्रदान किया गया। अब यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष अप्रैल में घोषित किए जाते हैं। पुरस्कार शुरू होने के एक वर्ष बाद 1918 में पुलित्जर पदक का डिजाइन मूर्तिकार डैनियल चेस्टर फ्रेंच और उनके सहयोगी हेनरी ऑगस्टस ल्यूकमैन द्वारा तैयार किया गया। पुलित्जर पुरस्कार संयुक्त राज्य अमेरिका में समाचार पत्र, पत्रिका और ऑनलाइन पत्रकारिता, साहित्य और संगीत रचना में उपलब्धियों के लिए दिया जाता है। कुल 21 श्रेणियों में ये पुरस्कार दिए जाते हैं। प्रत्येक विजेता को एक प्रमाण-पत्र व 10,000 डॉलर की नकद राशि दी जाती है। 21वीं श्रेणी के विषय 'लोक सेवा से संबंधित पत्रकारिता' के लिए स्वर्ण पदक दिया जाता है।
साथ ही स्कूल ऑफ जर्नलिज्म की सिफारिश पर प्रत्येक वर्ष 7,500 डॉलर की पांच पुलित्जर फैलोशिप भी प्रदान की जाती हैं।

एवरेस्ट पर ट्रैफिक जाम

इससे चोटी तक पहुंचने और लौटने में देरी होती है, जिस कारण कई पर्वतारोही अपनी ऊर्जा बरकरार नहीं रख पाते।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए मेगैन स्पेशिया

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वालों को पुरस्कार के रूप में जो दृश्य देखने को मिलता है, वह दुर्लभ है-उन्हें दुनिया की सबसे ऊंची जगह से हिमालय को देखने का अवसर मिलता है। लेकिन विगत बुधवार को चोटी से नीचे की ओर देखने वालों ने एक और दृश्य देखा। उन्होंने सैकड़ों पर्वतारोहियों को एवरेस्ट की चढ़ाई चढ़ते देखा। आखिरी चढ़ाई से एवरेस्ट की चोटी तक ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति थी, जहां पर दो सौ से पांच सौ लोग एक संकरे और दुर्गम रास्ते से गुजर रहे थे, जिस कारण चोटी तक पहुंचने में करीब तीन घंटे का विलंब हुआ।

हिमालय की चोटी पर, जिसे दुनिया के सबसे खतरनाक पहाड़ों में से एक माना जाता है, लंबी कतार से दूसरी तरह के खतरे भी हैं-इससे चढ़ाई चढ़ने वालों के ठंडी हवाओं की चपेट में आने के अलावा ऑक्सीजन खत्म हो जाने की भी आशंका रहती है। बुधवार को ही एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने के बाद लौटते हुए दो पर्वतारोहियों की मृत्यु हो गई, जिसकी वजह ट्रैफिक जाम को बताया जा रहा है। चौवन साल के अमेरिकी पर्वतारोही डोनाल्ड कैश

लौटते हुए गिर गए और उनके साथ के शेरपा काफी कोशिशों के बाद भी उन्हें बचा नहीं पाए। मारी जाने वाली दूसरी पर्वतारोही अंजलि कुलकर्णी भारतीय थी, जो चोटी पर पहुंचने के बाद अपने पति के साथ वापस लौट रही थी। उनके टूर ग्रुप के मैनेजर पुष्पेंद्र शेरपा का कहना था कि चोटी के आसपास भीड़ होने और लौटने में विलंब होने के कारण वह अपनी ऊर्जा बरकरार नहीं रख पाई और गिर गई। शेरपा का कहना था कि वर्ष 2017 में भी लौटने में हुई देरी के कारण एक पर्वतारोही की मृत्यु हो गई थी। अंजलि कुलकर्णी के साथ वापस लौटने वाले कई दूसरे पर्वतारोही शीतलहर की चपेट में आए।

डोनाल्ड कैश के टूर ग्रुप पायोनियर एडवेंचर्स के मैनेजर निवेश कार्की कहते हैं कि बीते बुधवार को चोटी से उतरते समय भारी भीड़ का एक कारण शानदार मौसम भी था। दरअसल प्रतिकूल मौसम में ज्यादातर पर्वतारोही चढ़ाई नहीं चढ़ते। इसके बजाय वे मौसम के बेहतर होने का इंतजार करते हैं। कार्की कहते हैं कि एवरेस्ट पर लगातार बढ़ रही भीड़ अब एक बड़ी समस्या है। पिछले सप्ताह भी एक भारतीय पर्वतारोही की अपने तंबू में मौत हो गई, तो एक आयरिश पर्वतारोही अचानक गिरने के बाद गुम हो गया। एवरेस्ट पर जोखिम होने के बावजूद पर्वतारोहियों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है।

एवरेस्ट से जुड़ा आंकड़ा नियमित रूप से रखने वाले एक ब्लॉगर एलेन आर्नेटे के मुताबिक, वर्ष 2018 में एवरेस्ट पर चढ़ने वालों की संख्या सबसे अधिक थी। नेपाल के पर्यटन मंत्रालय के मुताबिक, पिछले साल एवरेस्ट पर चढ़ने व विदेशी पर्वतारोहियों और स्थानीय गाइडों की संख्या 563 थी। जबकि आर्नेटे बताते हैं कि तिब्बत से भी अतिरिक्त 239 लोग चोटी तक पहुंचे। इस तरह बीते साल कुल पर्वतारोहियों की संख्या 802 थी। एवरेस्ट पर भीड़ के कारण केवल चढ़ने और उतरने में ही विलंब नहीं होता, बल्कि पहाड़ पर कूड़े का ढेर भी बढ़ता जा रहा है।

सूत्र

>> फ्रेड स्मिथ

नकारे गए आइडिया से बनाई सफलता की राह

मेरा जन्म मिसिसिपी के एक उपनगरीय इलाके में अगस्त, 1944 में हुआ था। जब मैं चार वर्ष का था, तभी मेरे पिता की मृत्यु हो गई। बचपन में मुझे हड्डी की बीमारी भी थी, जो दस वर्ष की उम्र होते-होते ठीक हो गई। मेरी मां ने मेरे आत्मसम्मान और हर प्रकार की शारीरिक गतिविधियों में मेरी भागीदारी को प्रोत्साहित किया। बचपन से ही मुझे विमानों में बहुत दिलचस्पी थी। 1966 में मैंने येल यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में ग्रेजुएट की डिग्री ली। ग्रेजुएशन के तुरंत बाद मैं अमेरिकी नौसेना में शामिल हो गया। मुझे वियतनाम भेजा गया, जहां मैं विभिन्न पृष्ठभूमि से आए लोगों से रूबरू हुआ, जिसमें ट्रक ड्राइवर, सड़कों और गैस स्टेशनों पर काम करने वाले लोग भी थे। वहां मैंने लॉजिस्टिक सिस्टम, वितरण और खरीद प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझने के लिए अपने समय का सदुपयोग किया। वहां के अनुभव ने मुझे अलग तरह का दृष्टिकोण प्रदान किया। नौसेना में तीन वर्ष काम करने के बाद मैं युद्ध से जर्जर वियतनाम से लौट आया। अब मैं अपने स्तर पर कुछ सकारात्मक काम करना चाहता था।

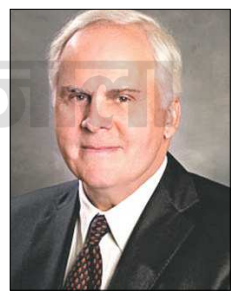

असल में येल यूनिवर्सिटी में मैंने अर्थशास्त्र का एक पर्चा लिखा था, जिसमें मैंने ओवरनाइट डिलिवरी सिस्टम के बारे में समझाया था। लेकिन मेरे शिक्षक ने मुझे उसमें सी ग्रेड दिया था, क्योंकि उन्हें मेरा आइडिया व्यावहारिक नहीं लगा था। 1971 में मैंने अपने आइडिया की व्यावहारिकता जांचने का फैसला किया और अपने पिता द्वारा छोड़े गए धन से फेडरल एक्सप्रेस नामक कंपनी की शुरुआत की। मैं लोगों को एक ऐसी कुरियर सर्विस प्रदान करना चाहता था, जो नियमित डाक सेवा से बेहतर हो। यहां मैंने वियतनाम में हासिल ज्ञान का उपयोग किया। मैंने बाजार की थाह ली, लोग चाहते थे कि उनके पार्सल सुरक्षित और समय पर जल्द से जल्द पहुंच जाएं। मैंने हवाई और जमीनी परिवहन साधनों से कुरियर पहुंचाने का काम शुरू किया। सबसे पहले हमने पैकेज को रातोंरात और सहज रूप में वितरित करने का सरल लक्ष्य रखा। हमारी कुरियर सेवा की सबसे अच्छी बात यह थी कि वह उचित कीमत पर उपलब्ध कराई जा रही थी। मैंने सोचा कि शीघ्र ही मुझे इसमें भारी सफलता मिलेगी और बहुत धन कमा लूंगा, लेकिन ऐसा तुरंत नहीं हुआ। मगर धैर्य के साथ मैं इस काम में लगा रहा और दुनिया की बड़ी कुरियर सेवा को कामयाब बनाया।

विफलता से हतोत्साहित हुए बगैर दृढ़ निश्चय और मेहनत के बल पर सफलता पाई जा सकती है।

इस हफ्ते के शब्द

टेरीजा मे

ब्रिटेन की प्रधानमंत्री टेरीजा मे ने सात जून को अपना पद छोड़ देने की घोषणा की है, क्योंकि ब्रेग्जिट के लिए समर्थन जुटाने में वह नाकाम रहीं।

क्वच (CWTCH)

हाल ही में कांग्रेसी नेता शशि थरूर ने अपने कॉलम में वेल्श भाषा के इस खास शब्द के बारे में बताया, जिसका अर्थ होता है प्रगाढ़ आलिंगन।

शेयर बाजार का अंदाज

40,000 अंक

के पार पहली बार पहुंचा बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज, लोकसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत के बाद।